माँग की लोच का महत्त्व

(Importance of Elasticity of Demand)

अर्थशास्त्र में माँग की लोच की धारणा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। सैद्धान्तिक रूप से इसके द्वारा मूल्य में परिवर्तन के फलस्वरूप माँग में परिवर्तन की गति की जानकारी मिलती है। लेकिन माँग की लोच की धारणा का हमारे व्यावहारिक जीवन में बहुत ही महत्त्व है। इसके द्वारा अनेक आर्थिक समस्याओं का विश्लेषण किया जा सकता है अतः माँग की लोच को "आर्थिक विश्लेषण का बहुमुखी उपकरण (versatile tool of economic analysis) कहा गया है। यही कारण है कि प्रो० केन्स (Keynes) ने माँग की लोच की धारणा को अर्थशास्त्र के क्षेत्र में मार्शल की सबसे महत्त्वपूर्ण देन कहा है। निम्नलिखित अवस्थाओं में माँग की लोच की धारणा का महत्त्व है—

(1) एकाधिकारी मूल्य के निर्धारण में (In determination of monopoly price):- एकाधिकारी को अपने मूल्य के निर्धारण में माँग की लोच की धारणा से बहुत मदद मिलती है। जिन वस्तुओं की माँग लोचदार होती है उन वस्तुओं के मूल्य को वह बहुत ऊँचा नहीं रख सकता क्योंकि मूल्य ऊँचा रखने से माँग में कमी आयेगी और उसका मुनाफा कम होगा। अतः ऐसी वस्तुओं का अधिक उत्पादन करके वह कुछ कम मूल्य पर ही बेचना पसन्द करेगा। दूसरी ओर जिन वस्तुओं की माँग बेलोचदार होती है, उन वस्तुओं की पूर्ति को नियंत्रित कर एकाधिकारी उनपर बहुत ऊँचा मूल्य भी वसूल सकता है। इस तरह एकाधिकारी मूल्य के निर्धारण में माँग की लोच बहुत सहायक है।

(2) मूल्य-विभेदीकरण एवं राशिपातन के क्षेत्र में (In the field of Price Discrimination and Dumping)— मूल्य-विभेदीकरण एवं राशिपातन के क्षेत्र में भी माँग की लोच की धारणा महत्त्वपूर्ण है। एकाधिकारी विभिन्न वर्गों के उपभोक्ताओं एवं विभिन्न स्थानों में क्रेताओं के बीच मूल्य-विभेदीकरण (Price Discrimination) तभी कर सकता है अथवा अलग-अलग मूल्य तभी वसूल सकता है जब विभिन्न वर्गों के उपभोक्ताओं एवं विभिन्न स्थानों के क्रेताओं की माँग की लोच अलग-अलग हो। राशिपातन (Dumping) में भी माँग की लोच की धारणा का प्रयोग होता है।

(3) उत्पादन के क्षेत्र में (In the sphere of production)— उत्पादन के क्षेत्र में भी माँग की लोच का महत्त्व है। हम जानते हैं कि समाज में जो कुछ

उत्पादन होता है वह उपभोक्ताओ की माँग से निर्देशित होता है। यदि उत्पादन को लाभदायक बनाना है तो उत्पादक को अपनी वस्तुओ और सेवाओ के उत्पादन मे तथा उपभोक्ताओ की माँग मे यथोचित सम्बन्ध एवं सन्तुलन स्थापित करना आवश्यक है। इसके लिए माँग की लोच की जानकारी आवश्यक है क्योकि माँग की लोच से उत्पादन बहुत हद तक प्रभावित होता है।

(4) कर-निर्धारण मे (In determination of taxes)- सरकार की वस्तुओ पर कर-निर्धारण करते समय माँग की लोच की धारणा मे सहायता मिलती है। जिन वस्तुओ की माँग लोचदार होती है उन पर सरकार प्रायः अधिक कर नही लगा सकती क्योकि कर लगाने से जो मूल्य बढ़ेगा उससे माँग कम हो जायेगी और सरकार को विशेष फायदा न हो सकेगा। लेकिन जिन वस्तुओ की माँग बेलोचदार होती है उनपर सरकार अधिक कर लगा सकती है क्योकि मूल्य बढ़ने पर भी वस्तुओ की माँग मे कमी नही होगी और सरकार को कर से उपयुक्त आय होती रहेगी।

(5) आर्थिक नीति के निर्धारण मे (In determination of economic policy)- सरकार को अपनी आर्थिक नीति के निर्धारण मे भी माँग की लोच का सहारा लेना पड़ता है। उदाहरण के लिये, मुद्रास्फीति (Inflation), अपस्फीति (Deflation), आदि को दूर करने के लिये सरकार को माँग की अवस्थाओ, माँग की लोच इत्यादि पर ध्यान देना पड़ता है। यहाँ माँग की लोच की सहायता से सरकार यह पता लगा सकती है कि किन-किन उद्योगो को सरकारी क्षेत्र मे लिया जाय। जिन वस्तुओ की माँग बेलोचदार हो और एकाधिकारी उनपर अधिक मूल्य लेकर जनता का शोषण कर रहे हो उनसे सम्बन्धित उद्योगो को जनहित मे सरकार को अपने हाथो मे ले लेना चाहिये।

(6) उत्पादन के साधनो के पारिश्रमिक के निर्धारण मे (In determining the remuneration of the factors of production)— माँग की लोच की धारणा उत्पादन के साधनो के पारिश्रमिक को तय करने मे भी सहायक है। उदाहरण के लिये, यदि श्रमिको की माँग की लोच अधिक हो और मजदूर संघ (Trade unions) अधिक मजदूरी के लिये संघर्ष करते हो तो वे मजदूरी को नही बढ़ा सकेगे। किन्तु यदि मजदूरो की माँग बेलोच होगी तो मजदूरी बढ़ाई जा सकेगी। यही बात उत्पत्ति के अन्य साधनो के साथ भी लागू होती है।

(7) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मे (In international trade)- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मे भी माँग की लोच की धारणा का सहारा लिया जाता है।

Scanned with CamScanner